'आखिर मैं भी एक बच्चा हूँ ना'

~~'आखिर में बच्चा~~

"समय का जब तमाचा पड़ता है तो कोई फ़कीर कोई बादशाह बन जाता है। किन्तु उस समय ने मेरी ज़िंदगी छीन ली।" यह सोचते-सोचते मेरा मन खयालों में डूब जाता है। एक छवी जब मेरी आँखों में नज़र आती है, अंदर ही अंदर का भय मुझे हिलाता है। और आखिर में मुझे एक प्रश्न चिढ़ाता है कि कब तक मैं इत्मीनान से हँस सका?

सब लोगों के आँखों से यादों की बूँदें टपक रही थी। मैं जाने-अन्जाने में उस माहौल में घुस गया था। मैं अपने चाहते के साथ खेल रहा था। और उसके बाद...

मेरे पिता जी बिना साँस लिए लेटे हुए थे। सिर्फ़ चहरा, देखा मैंने। और आखिरी बार मैंने उनके ठंडे पैरो को चूमा।

उस दिन मैंने अपनी माँ से पूछा, "क्या पिता जी वापस न आएँगे?" माँ कुछ भी बोले बिना चली गई।

उस दिन अँधेरा बहुत था, मेरे दिल में भी।
मेरे जीवन के दिये में प्यार की रोशनी बहुत कम थी। शायद इसलिए मेरी ज़िंदगी उजाला न हो सकी। मेरी माँ, मुझे और मेरे चाहते को लेकर एक घर गई और कहा कि अब यह तुम्हारा। मैं हँसते-मुस्कुराते वहाँ के एक शक्स के पास गया। उस शक्स ने मुझसे कहा, "कब तक तुम हँसते रहोगे?" - एक डरावनी मुस्कुराहट के साथ। यह सुन मेरे अंदर का भय ताण्डव करने लगा।

जब मैं तारों को निहारता तब वह शक्स और मेरी माँ मुझे छोड़कर चली जाते चले जाते।
जब मैं हँसता वह शक्स मुझे मारता और जब... मैं अपने पिता का नाम लेता तो माँ "कौन" का प्रश्न मुझपर फेंकती। आखिर क्या करता बच्चा हूँ ना।

और वह दिन भी सामने आ ही गया। मैं अपने पिता के खयालों में डूबा, एक हाथ और एक हथौड़ा मेरे पास आता जा रहा

था और... शून्य | माँ, पिता सबको मैंने एक क्षण में देखा |
आपको समझ आ ही गया होगा कि मैं कौन हूँ | आज का लड़का था मैं | एक तारा था मैं जिसको चमकने से पहले तोड़ा गया | जिसको जीने से पहले मारा गया | यह वचन इसलिए ताकि आप मेरी चीख न भूलो उस दिन जो मैंने सहा काश कोई और न सहे | बस ज्यादा कुछ नहीं बस एक बच्चे की तरफ से पूछ रहा हूँ मैं कि - "कब तक मैं खुलकर जी सकूँगा! कब तक मैं हँस सकूँगा!
[यह कथा मैं अर्पण करती हूँ |]
सब काश यह कथा महसूस कर पाए |